झारखंड का इतिहास

- प्रचीन काल से आधुनिक काल तक झारखंड का इतिहास एंव संस्कृति के निमार्ण में जनजातियो समाज का अमूल्य योग्दान रहा है । इसे समझने के लिए प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक मानवीय संस्कृति एंव सभ्यता के उद्भव तथा विकास से सम्बंधित ऐतिहासिक श्रोतो की बहुलता पाई जाती है ।
- झारखंड की जनसंख्या में विश्व की सभी प्रमुख मानव प्रजातियॉ जैसे –निग्रायड , मंगोलायड ,कॉकेसायड तथा प्रोटो–आस्ट्रोलॉयड के शारीरिक लक्षण पाए गए है ।
- झारखंड की जनजातिय जनसंख्या में प्रोटो–आस्ट्रोलाइड की प्रधनता है ।
- झारखंड के इतिहास को जानने में व समझने के लिए पुरातात्विक व साहितियक श्रोत के साथ–साथ जनजातियों की पारम्परिक वंशावली , लोक कथाएं व अनुश्रुतियो भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड के ऐतिहासिक श्रोत

साहित्यिक श्रोत

- शम्स –ए–शिराज अफीफ की तारीखे –फिरोज शाही में जंगल झाड़ की अधिकता के कारण झारखंड कहा गया ।
- शहबाज खां एंव अब्दुल – माथिर –उमरा
- मिर्जा नाथन की रचना – बहारिस्तान –ए–गैबो
- झारखंड के नामकरण से लेकर समाजिक सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है ।
- सलीमुल्ला और गुलाम हुसैन की रचनाओं में झारखंड क्षेत्र का वर्णन मिलता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- डी. एन मजुमदार की पुस्तक ' रेसेज एंड कल्चर्स ऑफ इंडियां ' से चेरो खरवार , भुमिज तथा संथाल आदि जनजातीयों के बारे में ,उनके झारखंड आगमन के बारे में तथा सांस्कृतिक समाजिक जीवन की जानकारी मिलती है
- बोरमैन की पुस्तक ' द नियरोलिथिक पैटर्न इन द प्री हिस्ट्री ऑफ इंडिया ' मे नव – पाषाणकालीन हस्तकुठारो के 12 प्रकारो की जानकारी मिलती है ।
- डाल्टन की पुस्तक ' द कॉल ऑफ छोटानागपुर , अमरदास का ' कथाकोष ' एल टिकेल की पुस्तक नाट्स ऑन ए टूर इन मानभूम तथा ' इथनोलॉजी ऑफ बगांल आदि पुस्तकों में जनजातीय इतिहास एंव संस्कृति का तथ्यात्मक विश्लेशन प्रस्तुत किया गया है ।

झारखंड इतिहास के पुराताम्विक श्रोत

❖ पुरातात्विक श्रोत का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य –

- पाषाणकाल के पाषाण उपकरण (पत्थर के उपकरण) जिसमे बोकारो से हस्तकुठार प्रमुख है ।
- यह उपकरण 1,00000 ई.पूर्व प्राप्त हुए है । पाषाणकालिन उपकरणों से झारखंड में आदिमानव के रहने का प्रमाण मिलता है ।

➢ 1991 ई. में हजारीबाग के इस्को मे किए गए उत्खनन से एक पाषाण (पत्थर) पर चित्रकारी का नमूना मिला है । जिससे दो प्रकृतिक गुफाओं की जानकारी मिलती है ।

➢ इस्को से ही भूल–भूलैया वाली आकृति के अवशेष प्राप्त हुए है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

हजारीबाग जिले के सतपहाड़ सरैया , रहम देहांगी , बड़कागांव तथा रामगढ़ जिले के गोला , कुसुमगढ़ , बॉसनगर , माण्डु , देसगार करसो , परसाडीह , बारागुण्डा , रजरप्पा आदि स्थलो से कुल्हाड़ी खुरचनी , बेधक , तक्षणी आदि उपकरण प्राप्त हुए हैं ।

➢ हजारीबाग के दुधपानी के निकट स्थित दुमदुमा से 8वीं एंव 12वीं सदी की पाषाणकालिन मूर्तियो के अवशेष प्राप्त हुए है । जो इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के विस्तार को स्पष्ट करता हैं ।

➢ चतरा जिले के प्रतापपुर प्रखण्ड में मुगलकालिन कुपा का किला स्थित हैं ।

गिद्धौर से मोगालिथ संस्कृति का प्रमाण

➢ चतरा जिले के इटखोरी से बौद्ध स्तुप प्राप्त हुआ है ।साथ ही जैन धर्म 10वें तीर्थकर शीतल नाथ के पद्चिन्ह

- चतरा के ही हंटरगंज प्रखण्ड मे कुलुआ पहाड़ी क्षेत्र से मध्यकालीन दुर्ग की चारदिवारी का साक्ष्य मिला हैं ।

कोलुआ पहाड़ या कौलेश्वरी पहाड़ – यह पहाड़ चतरा जिले के हंटरगंज प्रखण्ड मे स्थित है । यह हिन्दु जैन व बौद्ध तीनों धर्मो कपा संगम स्थ्ल है । यह सिख धर्म का भी केन्द्र रहा है । कहा जाता है कि गुरूनानक इस स्थान पर ठहरे थे । इस पहाड़ पर एक विशल सरोवर भी है । इस पहाड़ की ऊंचाई 1750 फीट है । इस पर्वत का सबसे ऊंचा भाग (शिखर) आकाशलोचन के नाम से जाना जाता है ।

- गढ़वा जिले के भवनाथपुर के निकट प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्र एंव अनेक प्राकृतिक गुफाओं के प्रमाण मिले है ।इन गुफाओं मे आलेख एंव पशुओं के चित्र है । जैसे – भैंसा , हिरण आदि के चित्र

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- पलामु जिलो के शाहपुर , रंकाकला ,बजना ,झाबर , नाकगढ़ पहाड़ी बालुगारा आदि से पाषाणकालीन कुल्हाड़ी , स्क्रेपर ब्लेड आदि प्राप्त हुए हे । पलामू के मूर्तिया नामक स्थन से बौद्ध धर्म के अनेक अवशेष प्राप्त हुए है ।
- धनबाद जिले के करूआ नामक ग्राम में बौद्ध स्तुप का प्रमाण पाया जाता हैं ।
- धनबाद जिले के बुद्वपुर एंव डाल्मी में भी अनेक बौद्व स्मारक स्थ्ति हैं । बुद्वपुर की पहाड़ियों मे बुद्वश्वर मंदिर के भग्नावशेष स्थ्ति है। अशोक के 13वें शिलालेख मे आटविक जातियों का उल्लेख हुआ है जो इसी क्षेत्र मे निवाश करने वाली जनजातियो थी ।

- सिहंभूम क्षेत्र के चक्रधरपुर , बेबो ,इसाडीह , बारूडीह , पूर्णापानी , ड्रुंगडुंगी , सरेंगा आदि स्थलो से पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल तक के क्रोड ,शल्क खंडक , विदारनी , तक्षणी आदि पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं ।
- बारूडीह में संजय और सोन – नाला नदी के संगम से नवपाषाणकालीन मृदभाण्ड , मिट्टी के बर्तन के टुकड़े पत्थर की हथोड़ी तथा डुगनी
- नीमडीह और बोनगरा से नवपाषाणकालीन पत्थर की कुल्हाड़ी तथा काले रंग का मृदभाण्ड प्राप्त हुआ है ।
- चाइबासा स्क्ति बुरहादी और रारू नदी के तट से नवपाषाणकालीन पत्थर के अनेक चाकु मिले हैं ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

महत्वपूर्ण प्रश्न :–

1. झारखंड की जनजातीय जनसंख्या मे किस प्रजाती की प्रधानता है –

क. मंगोलॉयड

ख. प्रोटोऑस्ट्रेलॉयड

ग. निग्रॉयड

ध. कॉकेसयाड

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

2. द कॉल ऑफ छोटानागपुर पुस्तक के लेखक है –

क. बोरमैन

ख. डी एन मजुमदार

ग. अमरदास

ध. डाल्टन

?

3. निम्नलिखित पुरातात्विक स्थलों व जिलो मे कौन सा यूग्म सही सुमेलित नही है –

क. रंका कला – पलामू

ख. बुद्वपुर – चतरा

ग. भवनाथपुर – गढ्वा

ध. दुमदुमा – हजारीबाग

4. आशोक के 13वे शिलालेख में आटविक जातियो का उल्लेख मिलता है , ये किस क्षेत्र में निवाश करने वाली जनजातियों थी –

क. बुद्वपुर पहाड़ी धनबाद

ख. नाकगठ पहाड़ पलामू

ग. इस्को क्षेत्र हजारीबाग

ध. प्रतापपूर चतरा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

5. भूल –भलैया ंवाली आकृति किस जिले के पुरातात्विक स्थ्ल से प्राप्त हुआ है –

क. पलामू

ख. गढ्वा

ग. हजारीबाग

ध. धनबाद

6. पुरातात्विक श्रोतो मे सबसे प्राचीनतम साक्ष्य किस जिले से प्राप्त हुए है–

क. धनबाद

ख. बोकारो

ग. पलामू

ध. गढ्वा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

7.किस पुस्तक मे नवपाषाणकालीन हस्तकुठारो के 12 की जानकारी मिलती है –

क. रेसेज एण्ड कल्यर्स ऑफ इंडिया

ख. माथिर –उल – उमरा

ग. द नियरोलिथिक पैटर्न इन द हिस्ट्री ऑफ इंडिया

ध. इथनोलॉजी ऑफ बंगाल

1– ख , 2–ध ,3–ख , 4–क , 5–ग ,6–ख , 7–ग

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का